



भारतीय ज्ञान परंपरा और विश्वबोध

डॉ. प्रिया जौहरी

स्वतंत्र शोधकर्ता

ई-मेल – priyajohryau@gmail.com

शोध सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित विश्वबोध की संकल्पना एक समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है। यह परंपरा सम्पूर्ण विश्व को एक जीवित और शाश्वत इकाई के रूप में देखती है जिसके सभी तत्व आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। इस ज्ञान परंपरा में एकता, विविधता में समन्वय, और सभी प्राणियों के प्रति करुणा की भावना निहित है जो की पूरे विश्व को एक कुटुंब के रूप में देखती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में आलेखित "वसुधैव कुटुंबकम" के सिद्धांत का मूल यही है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। भारतीय ज्ञान संस्कृति में निहित यह भावना विश्व के प्रति उसके महान दर्शन को दर्शाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में समाहित विशाल ज्ञान परंपरा की धरोहर का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति है, बल्कि सम्पूर्ण विश्व का कल्याण भी है। यह परंपरा यह एक गहन और बहुआयामी दर्शन प्रणाली है पर टिकी है जो हजारों वर्षों से विकसित हुई। इस परंपरा में वेद, उपनिषद, पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष, योग, धर्मशास्त्र और विभिन्न दर्शनों का समावेश है। भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल भौतिक जगत की समझ प्रदान करती है, बल्कि इसमें आत्मा, ब्रह्मांड और जीवन के गहन आध्यात्मिक ज्ञान के आयाम भी शामिल हैं। प्रस्तुत लेख में, भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में विश्वबोध की संकल्पना की व्याख्या की गई है। लेख में यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा निहित विश्वबोध का दर्शन किस प्रकार से सहायक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द - भारतीय ज्ञान परंपरा, विश्वबोध, पारंपरिक ज्ञान।



प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य सार्वभौम मानव कल्याण और संपूर्ण प्रकृति का संरक्षण एवं संवर्धन है। इसमें खगोल शास्त्र, सौरमंडल, अंतरिक्ष विज्ञान और भूविज्ञान से लेकर ब्रह्मांड की उत्पत्ति संबंधी कई आधुनिक तथ्यों का उल्लेख है। शरीर रचना, स्वास्थ्य विज्ञान, गणित और भौतिक विज्ञान से जुड़े तथ्य वेद, उपनिषद, ब्राह्मण साहित्य, सूत्र और संहिताओं में मिलते हैं। इसके साथ ही, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों के आधुनिक सिद्धांत, प्रौद्योगिकी, व्यापार और वाणिज्य के उन्नत विचार भी भारतीय प्राचीन ग्रंथों में निहित हैं। यह सर्वसमावेशी ज्ञान कोई धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए प्राण तत्व और चिरंतन विरासत है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन ग्रंथों में समाहित है। हमारे वेदों में प्रकाश की गति से लेकर हृदय के स्पंदन तक सभी के लिए गणितीय सूत्रों का जिक्र शामिल है। विद्युत विज्ञान से लेकर विमान शास्त्र तक के कई उन्नत वैज्ञानिक उपलब्धियों का उल्लेख भी प्राचीन ग्रंथों में किया गया है। पृथ्वी की दूरी के मापन से लेकर मानव हृदय की धड़कनों के अध्ययन तक, तथा आधुनिक अर्थशास्त्र, राजनीति, वाणिज्य, समाजशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और उन्नत प्रबंधन विज्ञान जैसे विविध एवं महत्वपूर्ण विषय भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा में समाहित रहे हैं। यह परंपरा न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए एक अमूल्य धरोहर है, जिसमें सार्वभौमिक ज्ञान और सदैव प्रासंगिक रहने वाले जीवन के सिद्धांत निहित हैं। ये सिद्धांत मानवता की चिरंतन सेवा और विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस शोध लेख में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्रोतों, उनमें प्रतिपादित विश्व-उत्पत्ति की अवधारणाओं, विश्वबोध के दर्शन तथा मानवीय मूल्यों का सम्यक् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, यह अनुशीलन किया गया है कि समकालीन वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु आवश्यक सूत्र किस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित रूप से विद्यमान हैं।

शोध उद्देश्य

इस शोध लेख के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—



1. भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित विश्वबोध के दर्शन का विश्लेषण करना।
2. भारतीय प्राचीन ग्रंथों (वेद, उपनिषद, महाकाव्य, पुराण, योग, आयुर्वेद आदि) में वर्णित सर्वभौमिक मानव कल्याण, सामंजस्य एवं एकात्म भाव के सिद्धांतों का अध्ययन करना।
3. वर्तमान वैश्विक चुनौतियों जैसे पर्यावरण संकट, मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएँ, युद्ध एवं आतंकवाद समाधान हेतु भारतीय विश्वबोध दर्शन की प्रासंगिकता को स्थापित करना।
4. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश की आवश्यकता और संभावनाओं को स्पष्ट करना, ताकि वैश्विक कल्याण एवं शांतिमय सह-अस्तित्व को बढ़ावा मिल सके।

शोध प्रश्न

इस शोध में निम्नलिखित प्रमुख प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है—

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्वबोध की अवधारणा क्या है और इसका मूल स्वरूप क्या है?
2. भारतीय प्राचीन ग्रंथों में मानव, प्रकृति और ब्रह्मांड के मध्य संबंध को किस प्रकार परिभाषित किया गया है?
3. क्या भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित दर्शन वर्तमान वैश्विक समस्याओं (पर्यावरण, आतंकवाद, स्वास्थ्य, शांति) के व्यावहारिक समाधान प्रदान कर सकते हैं?
4. शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों के समावेश से वैश्विक शांति, मानव मूल्य, और विश्वबोध की स्थापना किस प्रकार संभव हो सकती है?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध का स्वरूप गुणात्मक एवं वर्णनात्मक है, जिसमें साहित्य-आधारित विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है। इस अध्ययन में प्राचीन भारतीय ज्ञान-संपदा को केन्द्रीय संदर्भ-फलक के रूप में ग्रहण करते हुए, भारतीय विश्वबोध से संबंधित दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक



अवधारणाओं का सैद्धांतिक विश्लेषण किया गया है। शोध के लिए वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, योगसूत्र, आयुर्वेद ग्रंथ तथा धर्मशास्त्र आदि को प्राथमिक स्रोत के रूप में चयनित किया गया है। इसके अतिरिक्त, समकालीन शोध लेख, संदर्भ ग्रंथ, शोध जर्नल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), तथा विषय-विशेषज्ञों के व्याख्यान एवं प्रामाणिक प्रकाशनों को द्वितीयक स्रोत के रूप में समाविष्ट किया गया है। इस शोध की सीमा भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित विश्वबोध तथा उससे उत्पन्न सार्वभौमिक मानव-कल्याण, नैतिकता, पर्यावरण-दृष्टि एवं वैश्विक शांति-दृष्टि के विश्लेषण तक सीमित है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

कुमारी (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्त्वों, विशेषकर ज्ञान-मीमांसा, आचार-मीमांसा और तत्त्व-मीमांसा, के माध्यम से विश्वकल्याण के सिद्धांतों को समझना तथा उनकी वर्तमान प्रासंगिकता को स्थापित करना है। आज के भौतिकतावादी, प्रतिस्पर्धात्मक एवं मूल्य-संकटपूर्ण युग में भारतीय ज्ञान परंपरा के मानवीय और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता है उपभोक्तावाद, हिंसा, अन्याय और नैतिक पतन के बीच भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित “एकत्व-दृष्टि” और “वसुधैव कुटुम्बकम्” का सिद्धांत विश्वशांति और मानव कल्याण के लिए सशक्त मार्ग प्रदान कर सकता है।

गोहेल, एन. (2025) भारतीय ज्ञान प्रणाली एक विस्तृत एवं प्राचीन बौद्धिक परंपरा के आध्यात्मिक तथा अनुभवजन्य ज्ञान के समन्वय से परिपूर्ण है, जो विश्व को समझने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रतीक है। IKS का विस्तार गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और दर्शन जैसे विविध अनुशासनों तक है। इन क्षेत्रों के अतिरिक्त, इसने धातु विज्ञान, वास्तुकला तथा शासन-प्रशासन जैसे क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है, जिससे इसकी व्यापकता स्पष्ट होती है। अपनी समृद्ध विरासत के बावजूद, भारतीय ज्ञान प्रणाली ने मध्यकाल में अवनति का दौर देखा। किंतु वर्तमान समय में इस स्वदेशी ज्ञान के प्रति पुनः रुचि बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न नीतिगत पहलों के माध्यम से इसका पुनरुत्थान हो रहा है।



भट्ट, (2025) यह शोध पत्र समकालीन चुनौतियों के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का अन्वेषण करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से IKS की दार्शनिक आधारशिला, आधुनिक समाज में पारंपरिक ज्ञान के महत्त्व, उसके संरक्षण में आने वाली बाधाओं, तथा वैश्विक ज्ञान-प्रणाली में IKS के एकीकरण की संभावनाओं पर केंद्रित है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक विविध एवं गहन ज्ञान-संरचना के रूप में वर्णित की जाती है, जिसका विकास हजारों वर्षों में हुआ है। इसमें दर्शन, गणित, विज्ञान, कला, साहित्य और चिकित्सा सहित अनेक विद्या-क्षेत्रों का समावेश है। वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा एक नए पुनर्जागरण के दौर से गुजर रही है।

(खान एवं शर्मा, 2024) भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) भारत की प्राचीन संस्कृति, दर्शन और विज्ञान पर आधारित एक व्यापक ज्ञान-धारा है। IKS के तीन मुख्य आधार हैं—ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन। यह व्यक्ति के चारों विकास क्षेत्रों—शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक—पर संतुलित प्रगति का जोर देती है। IKS में धर्म, कर्म, योग और अहिंसा जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांत शामिल हैं। “वसुधैव कुटुम्बकम्” यानी “सारा विश्व एक परिवार है” का विचार IKS का प्रमुख मूल्य है, जो शांति, समावेशिता और विविधता का सम्मान करने की सीख देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने IKS को महत्त्व दिया है और इसे आधुनिक शिक्षा में शामिल करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है, ताकि प्राचीन भारतीय ज्ञान को आज की शिक्षा से जोड़कर मूल्य आधारित और उपयोगी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सके।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्रोत

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्रोत बहुत विस्तृत और विविधतापूर्ण हैं। यहाँ परंपरा के कुछ मुख्य स्रोतों का विवरण प्रस्तुत किया गया है :

- **वेद-** वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के सबसे प्राचीन और मुख्य स्रोत हैं। इनमें चार वेद आते हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों में धार्मिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक विचारों का संग्रह है।



- **वैदिक साहित्य-** वैदिक साहित्य में वेदों के शिक्षण, बहुविध सामग्री और तीन प्रकार के ग्रंथ सम्मिलित हैं:
- **ब्राह्मण ग्रंथ** - ये वेदों की शाखाओं के तुल्य हैं। वर्तमान में केवल 25 ब्राह्मण ग्रंथ उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ सहज उपलब्ध हैं।
- **आरण्यक** - ये भी वेदों की शाखाओं के तुल्य हैं। अभिप्राय यह है कि अरण्य में होने वाला अध्ययन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा और आध्यात्मिक विवेचन आरण्यक शब्द से गृहीत हैं।
- **उपनिषद्** - उपनिषदों की कुल संख्या 108 मानी जाती है। इनमें से नौ उपनिषद् सहज रूप से उपलब्ध हैं। उपनिषद् वेदों का ही हिस्सा माने जाते हैं, लेकिन इनमें वेदांत और दार्शनिक दृष्टिकोण पर अधिक जोर दिया गया है। इन्हें वेदों का सार भी कहा जाता है। प्रमुख उपनिषदों ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद् ईश, केन, माण्डूक्य आदि हैं।
- **रामायण और महाभारत-** ये भारतीय महाकाव्य हैं जो न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। इनमें मानव मूल्यों, कर्म और धर्म के सिद्धांतों पर गहन विचार किया गया है।
- **पुराण-** पुराणों में इतिहास, गाथाओं और पौराणिक कथाओं का संग्रह है। इनमें धार्मिक कथाएँ, भूगोल, दर्शन और ब्रह्मांड संबंधी जानकारी दी गई है। प्रमुख पुराणों में विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवत पुराण आदि शामिल हैं।
- **बौद्ध और जैन साहित्य-** बौद्ध और जैन धर्म के ग्रंथ भी भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बौद्ध धर्म के त्रिपिटक और जैन धर्म के आगम सूत्र प्रमुख हैं। इनमें धर्म, नीति, और समाज के प्रति कर्तव्यों की व्याख्या की गई है।
- **धर्मशास्त्र और स्मृतियाँ-** ये ग्रंथ समाज में नैतिकता और कानून के नियमों को स्थापित करने में सहायक हैं। मनुस्मृति, यावल्क्य स्मृति जैसे ग्रंथों में समाज के नियम-कानून और धर्म के पालन के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।



- **सूत्र ग्रंथ-** सूत्र ग्रंथ भारतीय शास्त्रों के ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें ज्ञान को संक्षिप्त और सूत्रबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है। "सूत्र" का अर्थ है ऐसा संक्षिप्त वाक्य या वाक्यांश जो कम शब्दों में व्यापक और गूढ़ अर्थ को व्यक्त करता है। सूत्र ग्रंथ मुख्यतः छः वेदांगों से सम्बंधित हैं और इनकी चार श्रेणियाँ होती हैं: श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र, शुल्ब सूत्र। प्रमुख सूत्र ग्रंथों में पाणिनि का अष्टाध्यायी (व्याकरण), पतंजलि का योगसूत्र (योग), और बोधायन सूत्र जैसे ग्रंथ आते हैं।
- **योग और आयुर्वेद-** पतंजलि का योगसूत्र और चरक संहिता, सुश्रुत संहिता जैसे आयुर्वेदिक ग्रंथ भारतीय स्वास्थ्य और चिकित्सा ज्ञान का हिस्सा हैं। इनमें योग, ध्यान और चिकित्सा पद्धतियों का गहन वर्णन है।
- **दर्शन-** छह प्रमुख दर्शन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, वेदांत और उनकी व्याख्याएँ भी भारतीय ज्ञान परंपरा का हिस्सा हैं।
- **तंत्र शास्त्र-** तंत्र शास्त्र में साधना, मंत्र और ध्यान की प्रक्रियाओं पर विचार किया गया है। यह परंपरा शिव और शक्ति के उपासकों के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय रही है।
- **अर्थशास्त्र और नाट्यशास्त्र-** कौटिल्य का अर्थशास्त्र शासन, राजनीति और अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र कला और नाट्यकला की परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इसके अतिरिक्त, राज्य शास्त्र, अर्थशास्त्र, नीति शास्त्र, स्मृतियाँ, संहिताएँ, योग, आयुर्वेद आदि पर भी हजारों ग्रंथ उपलब्ध हैं, जो ज्ञान और विज्ञान से भरे पड़े हैं। इन सभी ग्रंथों और शास्त्रों का योगदान भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाता है और इन्हीं स्रोतों से भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक जड़ों की पहचान होती है।

भारतीय ज्ञान ग्रंथों में विश्वबोध का दर्शन

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार व्यापक विश्वबोध और सर्वसमावेशी दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें मानव, प्रकृति, और ब्रह्मांड के पारस्परिक संबंधों को समझने की कोशिश की गई है। भारतीय



ग्रंथों जैसे वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, योग और आयुर्वेद शास्त्र में न केवल आत्मज्ञान, चेतना और आध्यात्मिकता पर बल दिया गया है, बल्कि यह भी बताया गया है कि किस प्रकार से मानव और प्रकृति के बीच एक संतुलन और सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा ही संपूर्ण ब्रह्मांड को एक परिवार माना है - "वसुधैव कुटुंबकम्" की अवधारणा इसी पर आधारित है। इसमें सभी जीवों, प्रकृति और ब्रह्मांड के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को प्रोत्साहित किया गया है। अद्वैत वेदांत ने यह सिखाया कि सभी प्राणी और वस्तुएं एक ही परमात्मा के अंश हैं, और सबमें एकता है। वेदों को ज्ञान का शुद्ध स्रोत माना गया है, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, प्रकृति के नियम और मानव जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। उपनिषदों ने आत्मज्ञान, सत्य और मोक्ष के गूढ़ रहस्यों को उजागर किया है, और आत्मा और परमात्मा के बीच के गहरे संबंध को समझने का प्रयास किया गया है। भगवद्गीता में कर्म, भक्ति, और ज्ञान योग के माध्यम से मानव जीवन के उद्देश्य और मार्गदर्शन का संदेश मिलता है। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य जीवन की चुनौतियों, नैतिकता, और आदर्शों का उल्लेख करते हैं, जो हर युग में प्रासंगिक रहे हैं। योगसूत्रों के माध्यम से पतंजलि ने मानसिक, शारीरिक और आत्मिक संतुलन की दिशा में मार्गदर्शन दिया है। योग और ध्यान के माध्यम से आत्मचिंतन और संतुलित जीवन की कला सिखाई गई है, जिससे मानव अपने भीतर शांति, ऊर्जा और शक्ति का अनुभव कर सकता है। आयुर्वेद में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के महत्व को दर्शाया गया है। यह स्वास्थ्य की समग्रता को समझते हुए स्वस्थ जीवन शैली, संतुलित आहार और प्राकृतिक उपचारों का मार्गदर्शन देता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र की परंपराओं में शासन, समाज की संरचना और अर्थनीति के उन्नत सिद्धांत दिए गए हैं, जो राज्य संचालन और समाज के संतुलन के सिद्धांतों पर आधारित हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित विश्वबोध न केवल मानव और समाज को उच्चतर ज्ञान-दृष्टि की ओर प्रेरित करता है, बल्कि मनुष्य को स्वयं से ऊपर उठकर संपूर्ण सृष्टि और ब्रह्मांड के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का बोध कराता है। यह ज्ञान समस्त जीव-जगत के कल्याण, शांति तथा संतुलन की दिशा में हमारा मार्गदर्शन भी करता है।



प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और विश्व की उत्पत्ति

ब्रह्मांड की उत्पत्ति के संबंध में महा विस्फोट के सिद्धांत, अर्थात् बिग बैंग की थ्योरी को वैज्ञानिक व्यापक साक्ष्यों के आधार पर पूरी तरह से स्वीकार कर चुके हैं। वैज्ञानिक साक्ष्यों के अनुसार, प्रारंभ में विशाल ब्रह्मांड एक अत्यधिक सघन और ऊर्जा से भरी अवस्था में था, जिसे एक अत्यधिक संकुचित बिंदु या एक आयामहीन "सिंग्युलैरिटी" के रूप में देखा जाता है। लगभग 14 अरब वर्ष पूर्व, एक भीषण महा विस्फोट हुआ, जिसके बाद ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। विज्ञान ने इस तथ्य को बहुत बाद में उजागर किया लेकिन हमारे में वेदों में इसकी चर्चा हजारों वर्ष पहले हिमकर दी गई थी। हमारे वेदों में इसी महाविस्फोट को "हिरण्यगर्भ" के नाम से संबोधित किया गया है। इसके अतिरिक्त हिरण्यगर्भ से पहले की स्थिति के बारे में भी वेदों और पुराणों में उल्लेख मिलता है, जहाँ यह वर्णन है कि सृष्टि की रचना से पहले न दिशाएँ थीं, न आकाश था। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश के रूप में पंचमहाभूत अस्तित्व में आए, और इन्हीं से इस सृष्टि का जन्म हुआ। पुराने ग्रंथों में वर्णित है कि पूर्व सृष्टि और वर्तमान सृष्टि के बीच केवल शून्य या अनंत शून्य का अस्तित्व था। नादकीय सूक्त के अनुसार, वर्तमान सृष्टि के उद्भव के पहले कुछ भी अस्तित्व में नहीं था। इसी में सृष्टि के आरंभ होने उसके विलुप्त होने का भी वर्णन मिलता है। वेदों में "ओम" को ब्रह्मांडीय आदेश और ऊर्जा का प्रतीक माना गया है, जो ब्रह्मांड की उत्पत्ति का साक्षी है। वर्ष 2003 में, वैज्ञानिकों ने ब्लैक होल के अध्ययन के दौरान पाया कि ब्लैक होल का दबाव क्लस्टर की गैस में तरंगें उत्पन्न करता है, जो "ओम" जैसी ध्वनि पैदा करती है। इस प्रकार, प्राचीन भारतीय ग्रंथ न केवल खगोल विज्ञान का अध्ययन करते थे, बल्कि उन्होंने ब्रह्मांड के जन्म, उसकी आयु और यह अंततः नष्ट होगा या अनंत रूप से चलेगा, इस पर भी विचार प्रस्तुत किए। हमारी प्राचीन सभ्यता वास्तव में ऐसी अकेली संस्कृति थी जिसने ज्ञात ब्रह्मांड का इतना सटीक वर्णन किया, जो आधुनिक विज्ञान के अवलोकनों और सिद्धांतों के अनुरूप है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में सार्वभौमिक मूल्य और नैतिकता का दर्शन



भारतीय ज्ञान ग्रंथों में मानवीय मूल्यों का गहरा और व्यापक वर्णन मिलता है। इन मूल्यों का उद्देश्य मानव जीवन को उच्चतर आदर्शों के आधार पर संवारना है ताकि व्यक्ति, समाज और संपूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव और संतुलन की स्थापना हो सके। वेद, उपनिषद्, गीता, महाभारत, रामायण और अन्य ग्रंथों में ये मूल्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं, जो आज भी समाज में प्रासंगिक हैं। भारतीय ग्रंथों में सत्य की महत्ता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। "सत्यमेव जयते" का संदेश मूलतः मुण्डक-उपनिषद् के सर्वज्ञात मंत्र 3.1.6 का शुरुआती हिस्सा है। मुण्डकोपनिषद् के जिस मंत्र से यह अंश लिया गया है, वह है-

“सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।

येनाक्रमंत्यृषयो ह्याप्तकामो यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥”

अर्थात्, केवल सत्य की ही विजय होती है झूठ की नहीं। परमात्मा प्राप्ति के लिए सत्य अनिवार्य साधन है तथा जगत के सभी कार्यों में भी सत्य की विजय होती है। इसी प्रकार हमारे ग्रंथ हमें अहिंसा की शिक्षा देते हैं जैसे अहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोह। अर्थात्, "अहिंसा का अर्थ है सभी प्राणियों के प्रति सर्वदा, सभी परिस्थितियों में और पूरी तरह से हिंसा का त्याग करना।" यह उद्धरण व्यासभाष्य से लिया गया है, जो पतंजलि योगसूत्र के अध्याय 2 और श्लोक 30, पर एक टिप्पणी है। इस सूत्र में अहिंसा के मूल्य को विस्तृत रूप में समझाया गया है। अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से परहेज नहीं है, बल्कि सभी प्रकार के हिंसात्मक विचारों, शब्दों और कर्मों से भी दूरी बनाए रखना। अहिंसा सर्वोच्च धर्म है, लेकिन धर्म की रक्षा के लिए हिंसा भी धर्म का हिस्सा है। सभी प्राणियों के प्रति करुणा और दया की भावना होनी चाहिए, लेकिन अधर्म और अत्याचार को समाप्त करने के लिए धर्मयुक्त हिंसा भी आवश्यक हो सकती है। महाभारत के अनुशासन पर्व में "अहिंसा परमो धर्मः, धर्म हिंसा तथैव च" का उल्लेख है। इसका अर्थ है, "अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।" इस वाक्य को धर्म के सर्वोच्च आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें सभी प्राणियों के प्रति दया और करुणा को प्राथमिकता दी गई है। यह श्लोक महाभारत के अनुशासन पर्व में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ भीष्म पितामह धर्म की गूढ़ता को समझाते हुए बताते हैं कि अहिंसा को प्रमुख धर्म माना गया है, लेकिन अधर्म के नाश के लिए और धर्म की रक्षा हेतु धर्मयुक्त हिंसा को भी उचित ठहराया गया है।



इसी तरह क्षमा का महत्व भी भारतीय संस्कृति में अत्यधिक है। महाभारत में युधिष्ठिर और रामायण में भगवान राम जैसे पात्र क्षमाशीलता के उदाहरण हैं। यह मूल्य हमें द्वेष से मुक्त होकर समाज में सौहार्द्रपूर्ण संबंध बनाए रखने में सहायक होता है। भारतीय ग्रंथों में क्षमा और करुणा का महत्व अनेक जगह पर दर्शाया गया है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म में करुणा को प्रमुख मूल्य के रूप में स्वीकारा गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी अर्जुन को करुणा का पालन करने का संदेश मिलता है। धैर्य का मूल्य हमें विपरीत परिस्थितियों में स्थिर रहने की प्रेरणा देता है। महाभारत के पात्र पांडवों ने अपने जीवन में धैर्य का पालन किया, जिसने उन्हें कठिन समय में भी सही राह पर बनाए रखा। भारतीय संस्कृति में निःस्वार्थ सेवा को श्रेष्ठ कर्म माना गया है। गीता में "कर्मण्येवाधिकारस्ते" का संदेश कर्म में लगन और निःस्वार्थता की भावना को प्रोत्साहित करता है, जो समाज और व्यक्तित्व दोनों के लिए कल्याणकारी है। भगवद् गीता और उपनिषदों में इंद्रियों पर संयम रखने और मन के विकारों को नियंत्रित करने का विशेष महत्व बताया गया है। संयम का मूल्य व्यक्ति को अपने आचरण पर नियंत्रण रखने और जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 2 और श्लोक 47 के अनुसार,

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मिणि॥

अर्थ: तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फल में कभी नहीं। इसलिए कर्म को फल की इच्छा से मत करो, और न ही अकर्मण्यता (कर्म न करने) में आसक्त हो। भारतीय परंपरा में वर्णित विभिन्न मूल्य हमें बदलती परिस्थितियों के साथ ढलने और नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होने की प्रेरणा भी देते हैं यह हमें शिक्षित करते हैं कि परिस्थितियाँ चाहे जो हों, व्यक्ति को अपने आंतरिक संतुलन को बनाए रखना चाहिए। "वसुधैव कुटुंबकम्" का मूल्य हमें जाति, धर्म, लिंग, और समाज के अन्य भेदभावों से ऊपर उठकर एकता और समानता के सिद्धांत पर जीने के लिए प्रेरित करता है। महोपनिषद् के अध्याय 4, का श्लोक 71 कहता है



अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

अर्थात् , संकुचित बुद्धि वाले लोग सोचते हैं कि "यह मेरा है और वह तेरा है," जबकि उदार हृदय वाले व्यक्ति के लिए पूरी पृथ्वी एक परिवार है। भारतीय ज्ञान ग्रंथों में निहित इन मानवीय मूल्यों का समाज और व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव है। ये मूल्य व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्म-संतुष्टि और सामाजिक सामंजस्य की दिशा के साथ नारी के महत्व को भी उजागर करते हैं। जैसे , मनुस्मृति अध्याय 3 के श्लोक 56 में उल्लेखित है:

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

अर्थात् , जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं; जहाँ उनका सम्मान नहीं होता, वहाँ सभी कार्य निष्फल होते हैं। वेदों में राष्ट्र कल्याण हेतु स्त्री की भी महती भूमिका है। ऋग्वेद, के मण्डल 8. 33 श्लोक में वर्णित है कि नारी संतान को जन्म देने वाली है, अतः सृष्टि रूपा है। तत्पश्चात् संतान को ज्ञान देने के कारण वह ब्रह्म के समान कही गई है -

अधः पश्यस्वमोपरि, संतरा पादकौ चरे।
मातेकशप्लं कौ दृशन्ति, स्त्री वा ब्रह्म बभूविथ॥

इन श्लोकों में भारतीय जीवन दर्शन और मूल्यों का सार निहित है, जो हमें जीवन के उच्चतम उद्देश्यों और नैतिकता का पाठ सिखाते हैं। भारतीय समाज में ये मूल्य जीवन के हर पहलू में प्रतिध्वनित होते हैं, चाहे वह परिवार में संबंध हों, कार्यस्थल पर नैतिकता हो, या देश-प्रेम और विश्व शांति का विचार में हो। इन मानवीय मूल्यों की सहायता से विश्वा में स्थिरता और सकारात्मकता का संचार किया जा सकता है। भारतीय ज्ञान ग्रंथों में निहित ये मूल्य केवल व्यक्तिगत जीवन में नहीं, बल्कि सामूहिक समाज में भी एकता, प्रेम, और प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।



भारतीय ज्ञान धरोहर और विश्व की मुख्य समस्याओं के समाधान

पर्यावरण की समस्या

आज के विश्व में पर्यावरण से जुड़ी कई समस्याएँ गंभीर रूप ले चुकी हैं, जिनका प्रभाव मानव जीवन, वन्यजीवन और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। ये समस्याएँ पृथ्वी की प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रही हैं और दीर्घकालिक संकट उत्पन्न कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्या है, जिसके कारण पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। जीवाश्म ईंधनों का उपयोग, औद्योगिक गतिविधियाँ और वनों की कटाई के कारण ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि हो रही है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग हो रही है। इसके कारण मौसम चक्र असामान्य हो गया है, और इसके असर से प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़, सूखा, और तूफान की तीव्रता बढ़ रही है। वाहनों, उद्योगों, और कृषि में कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग वायु को दूषित कर रहा है। उद्योगों का कचरा, कृषि में रसायनों का उपयोग और घरेलू अपशिष्ट जल स्रोतों में मिलकर जल को प्रदूषित कर रहे हैं। इसके साथ प्लास्टिक का उपयोग और इसका उचित निपटान न होना पृथ्वी के लिए बड़ा संकट बन गया है। जंगलों को तेजी से काटा जा रहा है, जिससे वन्यजीवों का आवास नष्ट हो रहा है और जैव विविधता में कमी आ रही है। जैव विविधता का संरक्षण पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन के लिए आवश्यक है, लेकिन वर्तमान स्थिति में जैव विविधता संकटग्रस्त है। इन पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करना विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। हम इन समस्याओं का समाधान अपनी सनातन परंपरा से प्राप्त कर सकते हैं। यजुर्वेद, मे वर्णित शांति पाठ 36. 17 में शांति की स्थापना और समस्त जीवों के कल्याण के लिए मंत्र उच्चारित किए गए हैं। शांति पाठ का उद्देश्य व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर शांति की प्राप्ति और वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना है। जो इस प्रकार है :

ॐ द्यौः शान्तिर-अंतरिक्षसं शान्तिर

पृथ्वी शान्तिर-आपः शान्तिर-ओससाध्यः शान्तिर ।

वनस्पतयः शांतिर-विश्वेदेवः शांतिर-ब्रह्म शांतिर



सर्व शांतिर-एव शांतिर सा मां शांतिर-एधि ।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

अर्थात्, आकाश में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हो, जल में शांति हो, औषधियों में शांति हो, वनस्पतियों में शांति हो, देवताओं में शांति हो, संपूर्ण सृष्टि में शांति हो। सभी दिशाओं में शांति का विस्तार हो, और वही शांति हम तक पहुँचे। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे वेदों में पर्यावरण शांति की बात कही गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को "माता" का दर्जा दिया गया है और उसे दिव्य मानकर उसकी रक्षा और सम्मान करने की प्रेरणा दी गई है। वृक्ष, जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि सभी को देवता के रूप में माना गया है, जो हमें संरक्षण और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का संदेश देते हैं। हमारी ज्ञान पद्धति में प्रत्येक प्राकृतिक तत्व को न केवल उपयोगी वस्तु के रूप में देखा गया, बल्कि उसे आदर, प्रेम और आभार के भाव के साथ पूजा करने को कहा गया है।

यह दृष्टिकोण मानव और प्रकृति के बीच पारस्परिक संबंध पर बल देता है, जहाँ मनुष्य प्रकृति का शोषणकर्ता नहीं, बल्कि उसका सह-अस्तित्व में रहने वाला सहयोगी है। वृक्षों को देवताओं का निवास स्थान माना गया, विशेषकर पीपल और बरगद जैसे वृक्षों की पूजा की जाती है। इसे प्रकृति के प्रति आस्था का एक तरीका माना गया, जो पर्यावरण संरक्षण की ओर प्रेरित करता है। पेड़-पौधों से हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन, भोजन और औषधियाँ मिलती हैं, और उन्हें देवतुल्य मानने से यह भावना उत्पन्न होती है कि उनका संरक्षण और संवर्धन हमारी जिम्मेदारी है। इसी प्रकार, जल को "जल देवता" का दर्जा दिया गया, जिसका अर्थ है कि जल का प्रयोग सोच-समझकर और सम्मानपूर्वक करना चाहिए। भारतीय संस्कृति में नदियों, विशेषकर गंगा, यमुना और सरस्वती को देवी का रूप माना गया, और उनकी पूजा की जाती है। इस प्रकार, पानी के महत्व को समझते हुए उसकी रक्षा करना आवश्यक है। वायु, पृथ्वी, और अग्नि जैसे तत्वों को भी देवी-देवताओं का प्रतीक मानकर सम्मानित किया गया। "वायु देवता" हमें शुद्ध हवा का महत्व बताते हैं, "पृथ्वी माता" यह सिखाती है कि हमारी धरती हमें भोजन, जल, खनिज आदि देती है, इसलिए इसे दूषित या क्षतिग्रस्त न करना ही हमारा कर्तव्य है। "अग्नि देवता" ऊर्जा का प्रतीक हैं, जो पवित्रता, शक्ति और उत्सर्जन का प्रतीक मानी जाती है। इस ज्ञान परंपरा का आधार यह है कि मनुष्य



को प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना चाहिए और सह-अस्तित्व में रहना चाहिए। यह केवल एक धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि इसमें गहरा पर्यावरणीय विज्ञान भी निहित है। यदि हम प्रकृति का सम्मान करते हैं, तो वह हमें जीवनदायिनी संपदाएं प्रदान करती है; और यदि हम इसे नुकसान पहुंचाते हैं, तो यह संतुलन बिगड़ सकता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति यह संवेदनशीलता और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का विचार आज के समय में पर्यावरणीय संकटों से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है। आज के इस दौर में यह जरूरी है आने वाली पीढ़ी इस को समझ सकें।

सबके कल्याण और वैश्विक शांति का आह्वान

भारतीय ज्ञान की परंपरा में संपूर्ण विश्व के कल्याण का आह्वान केवल एक विचार नहीं, बल्कि यह मानवता की ओर एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। भारत का प्राचीन दर्शन हमें सिखाता है कि यदि हम सभी मनुष्य, जीव-जन्तु और प्रकृति के प्रति सहृदयता और करुणा का भाव रखें, तो एक समृद्ध और शांतिपूर्ण संसार का निर्माण संभव है। यजुर्वेद के अध्याय 36 और श्लोक 17 कहता है:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी मंगलमय घटनाएँ देखें और किसी को दुःख का भागी न बनना पड़े। यह मंत्र हर व्यक्ति के लिए, हर समुदाय के लिए और पूरे संसार के लिए सुख और समृद्धि की प्रार्थना करता है। ऋग्वेद 10.191.2 श्लोक में सबके साथ में एक सा सोचने की प्रार्थना की गई है :

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

तुम सब अच्छी तरह मिलकर चलो। तुम सब अच्छी तरह मिल कर बोलो। एक जैसी बात करो। अलग-अलग विवाद मत करो। ठीक प्रकार से बोलो। सोच समझ कर बोलो। ऐसा मत बालो जिससे तुम्हें



अपनी बात बदलनी पड़े। तुम सब के मन समान हो कर ज्ञान प्राप्त करें। अर्थात् तुम्हारे मन एक समान आगे बढ़े, एक साथ ज्ञान प्राप्त करें। पहले हुए देवता, पहले के लोग। यहां देवता का अर्थ है देवताओं जैसे सद्गुणों वाले विद्वान लोग ज्ञान प्राप्त करके अपना कार्य संपन्न करते हैं। अर्थात् जैसे पहले के लोग ज्ञान प्राप्त कर अपना कार्य पूरा करते थे वैसे ही आप भी ज्ञान प्राप्त कर अपना कार्य संपन्न करें।

समानी व आकृतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनोः यथा वः सुसहासति॥ (ऋग्वेद, 10.191.4)

ऋग्वेद, में संकल्प, आकलन, दृष्टि से यहां यह संदेश दिया गया है कि तुम सब का एक जैसा संकल्प हो, एक जैसा निश्चय हो। तुम सब के हृदय एक जैसे हों। तुम सब का मन एक जैसा हो जिससे तुम आसानी से संगठित हो सको। मैत्री भाव तभी बढ़ सकता है जब सब का मन एक जैसा हो। एक दूसरे के सुख दुख का अनुभव कर सकें। तभी हम आपस में बंधु भव को बढ़ा सकते हैं।

सूर्यचन्द्रमसौ इव स्वस्ति पन्थाम् अनुचरेम ददता, अघ्नता, जानता पुनः संगमेमहि। (ऋग्वेद 5.51.15)

अर्थात्, जैसे सूर्य और चन्द्रमा विश्व में सब का भला करते हैं, हम भी वैसे ही बनें। हम भी विश्व में सभी का हित करें और इस के लिए स्वस्ति अर्थात् कल्याण के मार्ग पर चलें।

विध्वंसक युद्ध और वैश्विक अस्थिरता

दुनिया में राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक विवादों के कारण कई क्षेत्रों में युद्ध और हिंसा का प्रसार हो रहा है। आतंकवाद, सीमा विवाद और आर्थिक संघर्षों ने वैश्विक शांति को खतरे में डाल दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा दुनिया की सबसे पुरानी में से एक है और यह स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और विश्व शांति के सिद्धांतों को स्वीकार करती है। भारत की महान परंपरा हमेशा से शांति का पक्षधर रही है, जिसने शुरू से मानना है कि युद्ध से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। सृष्टि की आदिम रचना एवं आदिम साहित्य वेद विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व, विश्व कल्याण और अनेकत्व में एकत्व का भाव जागृत करते



हैं। वेद में निहित एव निर्दिष्ट जीवन-पथ का अनुसरण कर सम्पूर्ण विश्व में शान्ति और समन्वय की प्रतिष्ठा की जा सकती हैं। ऋग्वेद, के 10वें मंडल का 191वां सूक्त ऋग्वेद का अंतिम सूक्त है। इस सूक्त में सबकी अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले अग्निदेव की प्रार्थना, आपसी मतभेदों को भुलाकर सुसंगठित होने के लिए की गयी है। संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ। इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भरा। प्राचीनतम ज्ञात सभ्यता में निरंतर खोज के कारण भारत को अन्य प्रारंभिक सभ्यताओं की तुलना में "शांतिपूर्ण और बिना युद्ध या विजय" वाला राष्ट्र रहा। सर्वाणि भूतानि मा ;माम्द्र मित्रास्य चक्षुषा समीक्षन्ताम्, अहं सर्वाणि भूतानि मित्रास्य चक्षुषा समीक्षे। मित्रास्य चक्षुषा समीक्षामहे।(यजुर्वेद, 36.10.18) अर्थात्, सारे लोग मुझे अपना मित्रा मानें। इस संसार के सारे प्राणी-;मनुष्य और पशुद्ध मुझे मित्रा की दृष्टि से देखें। मैं सभी प्राणियों को मित्रा की दृष्टि से देखूँ। वेद में यह प्रार्थना की गई है कि सारे प्राणी मुझे मित्रा की दृष्टि से देखें और मैं भी यह कहता हूँ कि मैं स्वयं भी सभी प्राणियों को मित्रा की दृष्टि से देखता हूँ। इस मन्त्रांश में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि न केवल संसार के समस्त प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और न केवल मैं ही विश्व के प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूँ अपितु हम सब संसार के प्राणी एक दूसरे को मित्र भाव से देखें।

भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से अंतर्राष्ट्रीय शांति का अध्ययन करने के लिए यह समझना आवश्यक है कि भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच बुनियादी अंतर हैं। पश्चिमी संस्कृति मानव व्यक्तित्व को केवल शरीर और मन तक सीमित मानती है, जबकि भारतीय संस्कृति में यह त्रिस्तरीय होता है: शरीर, मन और शुद्ध चेतना या आत्मा। भारतीय संतों ने यह भी खोज की कि यह शुद्ध चेतना या आत्मा (जिसे आत्मा कहा गया है) प्रत्येक व्यक्ति में प्रतिबिंबित होती है और सभी गुणों में ब्रह्म के समान है। पश्चिमी दृष्टिकोण में, मानवता का केंद्र बिंदु बाहरी दुनिया में होता है और मन तथा बुद्धि इसके विकास के मुख्य साधन होते हैं। इसके विपरीत, भारतीय दृष्टिकोण में मानवता का विकास हृदय, अंतर्ज्ञान, और ध्यान जैसे साधनों से होता है, जो आत्मा के निकट होते हैं और इसकी शक्ति से प्रभावित होते हैं।



जो भी उद्धरण दिए गए हैं उससे यह स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में संपूर्ण विश्व की एकता और शांति की कामना की गई है। वेदों का उद्देश्य है कि सभी मनुष्यों में समान भावना, मित्रता, और सहयोग की भावना का प्रसार हो, ताकि वे एक साथ संगठित होकर जीवन जी सकें। वैदिक दृष्टिकोण में न केवल आधुनिक संदर्भों में वैज्ञानिक, आर्थिक, और सामाजिक दृष्टिकोण से यह उपयुक्त है, बल्कि इसके सिद्धांत सार्वकालिक और सार्वभौमिक हैं। वैदिक विचारों का यह सिद्धांत बताता है कि ज्ञान का मूल उद्देश्य है संपूर्ण मानवता के बीच प्रेम, सहयोग, और भाईचारे को बढ़ावा देना, ताकि सबके बीच समरसता बनी रहे।

स्वास्थ्य का संकट

आज विश्व का हर देश लगभग स्वास्थ्य संकट से जूझ रहा है। स्वास्थ्य संसाधनों का अभाव और स्वास्थ्य सेवाओं तक असमान पहुंच ने इस समस्या को और बड़ा बना दिया है। मानसिक स्वास्थ्य से संबंधी समस्याएं पूरे विश्व में तेजी से बढ़ती जा रही हैं और अब यह एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा बन चुकी हैं। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में अवसाद, चिंता, तनाव, और द्विध्रुवी विकार शामिल हैं। कोविड-19 महामारी ने हाल ही में यह स्पष्ट कर दिया कि वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली कितनी कमजोर है। इसके अलावा, कई संक्रामक और गैर-संक्रामक रोग भी तेजी से फैल रहे हैं। ऐसे में भारतीय योग और आध्यात्मिक दर्शन मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य संकटों के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो आज के चुनौतीपूर्ण जीवन में अत्यधिक प्रासंगिक और आवश्यक है। भारत का आध्यात्मिक दर्शन मानसिक और शारीरिक संतुलन प्राप्त करने के लिए प्राचीनतम मार्गदर्शकों में से एक है। इसका उद्देश्य केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक शांति, आत्म-ज्ञान, और आध्यात्मिक उत्थान की प्राप्ति भी है। भारतीय दर्शन, विशेषकर योग, आयुर्वेद, वेदांत और ध्यान, सभी में आत्मा, मन, और शरीर के संतुलन को महत्वपूर्ण माना गया है। अनेक शारीरिक और मानसिक रोगों का समाधान योग दर्शन में मिलता है। शोध में पाया गया है कि योग हमारे मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है। आज पूरी दुनिया योगा के लाभ को समझ चुकी है। यह योग दर्शन भारत की महान ज्ञान परंपरा की पूरे विश्व की देन है। योग दर्शन भारत की महान ज्ञान परंपरा का एक अद्वितीय



उपहार है, जो पूरे विश्व को समर्पित है। यह केवल शारीरिक क्रियाओं या मुद्राओं का एक समूह नहीं है, बल्कि आत्मिक, मानसिक और शारीरिक संतुलन प्राप्त करने का विज्ञान है। योग न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देता है, बल्कि शांति, एकता, और विश्व कल्याण का संदेश भी देता है। भारतीय संस्कृति में योग का यह दर्शन सहस्राब्दियों से संचित ज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो आज वैश्विक स्तर पर सभी के जीवन में संतुलन और समृद्धि ला रहा है। योग से सकारात्मक जीवनशैली में बदलाव करने की प्रेरणा मिलती है। इन लाभों के अलावा, योग उन लोगों के लिए भी फायदेमंद हो सकता है जो वजन कम करना, धूम्रपान छोड़ना और पुरानी बीमारी का प्रबंधन करना चाहते हैं। योग किसी के लिए कितना लाभकारी है यह निर्देश की गुणवत्ता और अभ्यास किए जा रहे योग के प्रकार पर निर्भर हो सकता है। चरक द्वारा लिखित चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता, और वाग्भट द्वारा लिखित अष्टांग हृदय को आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों में गिना जाता है। पिछले कुछ समय से लोगों ने आयुर्वेद के महत्व को पुनः स्वीकार किया है, और आश्चर्यजनक रूप से आयुर्वेद द्वारा कई रोगों का सफलतापूर्वक इलाज किया गया है, जो आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा से संभव नहीं हो सका।

भारतीय दर्शन में अध्यात्म का तात्पर्य सही जीवन जीने और सही सोचने से है। भारतीय अध्यात्म में यह माना जाता है कि जो व्यक्ति सफलता या असफलता से अप्रभावित रहता है, स्वार्थ और अहंकार से रहित होता है, वह हर जगह ईश्वर को देख सकता है। आज पूरे विश्व में भारतीय आध्यात्मिकता के अनुयायी बढ़ रहे हैं। योग, ध्यान और आध्यात्मिक जीवन का अभ्यास करने वाले लोगों की संख्या न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर बढ़ी है ताकि पता चल सके कि मैं कौन हूँ। मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? योग, श्वास क्रिया और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति शरीर, मन और आत्मा के बीच संबंध स्थापित कर सकता है जो व्यक्ति को खुश और स्वस्थ बनाएगा।

आतंकवाद की समस्या

आतंकवाद एक ऐसी समस्या है जो पूरी दुनिया को प्रभावित कर रही है। इसका मूल कारण न केवल हिंसा और असहिष्णुता है, बल्कि अनुचित दृष्टिकोण और गलत मान्यताओं का भी प्रभाव है।



भगवद् गीता के सूत्र, जो अर्जुन और कृष्ण के बीच संवाद के रूप में प्रस्तुत हैं, इस प्रकार की समस्याओं को समझने और उनके समाधान में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। गीता के कुछ प्रमुख सूत्र आतंकवाद जैसी समस्याओं से निपटने में एक मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को धर्म के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा दी है। धर्म का मतलब सही और गलत के बीच निर्णय लेना है। आतंकवाद के संदर्भ में, गीता का यह सूत्र इस बात पर बल देता है कि कर्तव्य का पालन सदैव सत्य और न्याय के मार्ग पर होना चाहिए, न कि किसी असत्य या हिंसा की राह पर। गीता में कहा गया है कि हर व्यक्ति को अपने कार्यों में संयम रखना चाहिए। 'अहिंसा परमो धर्मः' (अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है) के अनुसार, गीता में हिंसा से दूर रहने का संदेश दिया गया है। आतंकवाद के मामले में यह संदेश बताता है कि किसी भी विचारधारा या धर्म के नाम पर हिंसा को उचित नहीं ठहराया जा सकता। गीता में लिखा है कि काम (अवांछनीय इच्छाएं), क्रोध (गुस्सा), और लोभ (लालच) तीन मुख्य कारण हैं जो व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाते हैं। आतंकवाद के कई रूपों में इन तीनों तत्वों की भूमिका होती है। गीता के इस सूत्र का पालन कर इन नकारात्मक गुणों पर नियंत्रण पाया जा सकता है और सहिष्णुता तथा धैर्य को बढ़ावा दिया जा सकता है। गीता का अध्याय 6 'समदर्शिता' यानी सभी में समानता की भावना पर जोर दिया गया है। आतंकवाद का एक बड़ा कारण लोगों में भेदभाव और असमानता की भावना होती है। गीता का यह सूत्र बताता है कि सभी प्राणियों के प्रति समान दृष्टिकोण और सह-अस्तित्व की भावना रखना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण हिंसा और नफरत को कम करने में सहायक हो सकता है। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया। यह कहते हुए कि 'विवेक से कार्य करो,' गीता आतंकवाद जैसी समस्याओं को समझने और उनका बुद्धिमत्तापूर्ण समाधान खोजने का संदेश देती है। गीता के अनुसार, मोह और आसक्ति व्यक्ति को गलत मार्ग पर ले जाती हैं। आतंकवाद के पीछे भी मोह और अन्य अनुचित आसक्तियों का प्रभाव होता है, जो व्यक्ति को हिंसा के मार्ग पर प्रेरित करते हैं। गीता का यह सूत्र बताता है कि मोह के परे जाकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए और मोह-माया से ऊपर उठकर सही और गलत में भेद करना चाहिए। व्यक्ति को अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए और आत्म-सुधार की ओर ध्यान देना चाहिए। आतंकवाद की जड़ अक्सर व्यक्तिगत आक्रोश, असंतोष, और



नफरत में होती है। अगर व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण पाकर आत्म-सुधार की ओर बढ़े, तो आतंकवाद जैसी समस्याएं काफी हद तक नियंत्रित हो सकती हैं। गीता में यह बताया गया है कि आत्म-साक्षात्कार और सत्य के मार्ग पर चलकर ही वास्तविक शांति पाई जा सकती है। ये सूत्र व्यक्ति और समाज को हिंसा से मुक्त कर, एक शांतिपूर्ण और सकारात्मक समाज के निर्माण की दिशा में प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान-विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्चस्तरीय रही है। आज शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता है। शिक्षा में भारतीय पुरातन ज्ञान परंपरा और संस्कृति के समावेश के दृष्टिकोण से यह संगम मात्र एक विकल्प नहीं है, बल्कि इस दिशा में सच्चा प्रयास है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा कला, संस्कृति, दर्शन, समाजशास्त्र, विज्ञान, और प्रबंधन समेत विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा के क्षेत्र में अपनाकर विश्व कल्याण की प्रक्रिया को मजबूत किया जा सकता है जिससे समाज के सदस्यों में परस्पर प्रेमभाव तथा हितभावना से विश्व में बंधुत्व की भावना की वृद्धि हो सके। भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रंथों उपदेश दिए उपदेश मनुष्य में मित्रता की भावना बढ़ाने के लिए और हमें परस्पर में किस प्रकार का व्यवहार करना इसके लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

मौजूदा भारतीय शिक्षण पद्धति में पश्चिमी दृष्टिकोण का झुकाव है; ऐसे में शिक्षण पद्धति में भारतीय दृष्टिकोण के विकास को बढ़ावा देना बदलते वैश्विक परिवेश की आवश्यकता है। आज हम देखते हैं कि संपूर्ण विश्व अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं का समाधान करना पूरी मानव जाति के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में भारतीय ज्ञान परंपरा में सुझाए गए सूत्र समाधान के लिए एक नया मार्ग पुनः सृजित कर मानवता को एक नई दिशा और दशा प्रदान कर सकते हैं।



भारतीय शिक्षा नीति, (2020) के द्वारा यह प्रयास पुनः प्रारंभ किया गया है। इस प्रयास के माध्यम से हम अपनी प्राचीन व्यवस्था से पुनः अपने आप को जोड़ सकते हैं और विश्व को ऐसे दृष्टिकोण की उपलब्धता प्रदान कर सकते हैं जो विश्व की अनेक समस्याओं के समाधान के लिए लाभकारी हो। मेरी समझ में, भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति लोगों को सचेत करने की आवश्यकता है और इस कार्य को केवल शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षण पद्धति में प्राचीन ज्ञान परंपरा के मूल्यों और आदर्शों को पुनः स्थापित करें, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हमारी धरोहर के महत्व को समझ सकें।

प्राचीन शिक्षा पद्धति " सा विद्या या विमुक्तये " के सिद्धांत पर आधारित थी, लेकिन वर्तमान शिक्षा पद्धति व्यावसायिक सिद्धांतों पर आधारित हो गई है, जिसके कारण ऐसे मनुष्य का निर्माण हो रहा है जो एकांगी है और जीवन की सम्पूर्णता को समझ पाने में असमर्थ है। किसी भी खुशहाल विश्व की संरचना के लिए आवश्यक है कि सभी मनुष्य यह समझें कि इस विश्व के सभी घटक एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यदि कोई राष्ट्र यह सोचता है कि वह केवल अपने राष्ट्र के संचालन के लिए जिम्मेदार है तो ऐसी सोच से यह विश्व शांति सुख के मार्ग पर नहीं बढ़ पाएगा। हम आज विश्व में अनेक ऐसे उदाहरण देख रहे हैं जहाँ सीमित सोच और स्वार्थपरता के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि यह अच्छी तरह से समझते थे कि संपूर्ण विश्व के सभी तत्व प्रकृति, पर्यावरण, मानव और जीवन की आवश्यकताएं सभी एक-दूसरे से जुड़े हुई हैं। इसलिए उन्होंने अपने द्वारा रचित ग्रंथों में विश्व कल्याण और शांति के सूत्रों का प्रतिपादन किया। हमारी शिक्षण व्यवस्था भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का आधारित होनी चाहिए ताकि ऐसे मानव का निर्माण हो सकें जो व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठ कर इस विश्व को एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ देखने और समझने के काबिल बना सकें। इस कार्य को करने की सबसे अधिक जिम्मेदारी भारत की है क्योंकि यह हमारी विरासत है हमारी सनातन परंपरा है। सबसे पहले हमें इस पर गर्व करना होगा, विस्मृत हो चुके ज्ञान के सागर फिर से भरना होगा।



सन्दर्भ सूची:

1. भूपेन्द्र कुमार,(2023-24). *वैदिक वाङ्मय में राष्ट्र चिंतन*, वेद विज्ञानभास्वती, वैदिक विज्ञान केंद्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंक 6 – 7 , पृष्ठ 100-110.
2. कुमारी, अ. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा और विश्वबोध: एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (IJFMR), 7(5), 1-11.
3. खान, एस. ए., एवं शर्मा, एम. (2024). भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक अवलोकन. इंटीग्रेटेड जर्नल फॉर रिसर्च इन आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज, 4(4), 42-46. DOI: 10.55544/ijrah.4.4.7
4. भट्ट, पी. एन. (2025). भारतीय ज्ञान प्रणाली और समकालीन मुद्दे. 2(2), 71-74. <https://doi.org/10.32628/ijsrhss252215>
5. गोहेल, एन. (2025). भारतीय ज्ञान प्रणाली: ज्ञान और विज्ञान की विरासत [Indian Knowledge System: A Legacy of Wisdom and Science]. एडवांस इंटरडिसिप्लिनरी मल्टीलिंगुअल जर्नल, 1(1), 5-12. <https://doi.org/10.64328/aimj.v1i1.002>
6. दास कृष्ण हरि, (2020). ईशादि नौ उपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर
7. शर्मा भगवती प्रकाश, (2024). *कालजयी भारतीय ज्ञान*, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
8. मुण्डकोपनिषद्, (3\1\6)
9. पतंजलि योगसूत्र, (2 \30)
10. महाभारत, अनुशासन पर्व/(25)
11. श्रीमद्भगवद्गीता, (2 \47)
12. महोपनिषद्, (4 \ 71)
13. मनुस्मृति, (3 /56)
14. ऋग्वेद, (8\33)
15. यजुर्वेद, शांति पाठ (36,17)
16. यजुर्वेद, (36\17)
17. ऋग्वेद,10\191\2
18. ऋग्वेद, (10\191\4)
19. ऋग्वेद,(5\51\15)
20. ऋग्वेद,(10\191)
21. यजुर्वेद, (36\10\18)